

स्मरपस्मरो ऽयं धमयति दृष्टं घूर्णयति च Spr. 1363. धामितालैश्च वदनेः HARIV. 4086. धामयित्वा जलं बद्ध 16096. धमयामास पटहम् *er liess die Trommel umhergehen* so v. a. *umhergehen und durch Trommelschlag dem Volke Etwas verkünden* KATHÁS. 24, 52. धमय कृत्स्ने ऽत्र पुरे पटह-घोषणाम् 50. — 2) *drehen, in die Runde bewegen, schwingen*: कृतो धाम्यते ब्रह्मचक्रे ÇYETÁÇV. UP. 1, 6. पेनेदं धाम्यते ब्रह्मचक्रम् 6, 1. MAITRĀJUP. 4, 2. JĀGŪ. 3, 182. धामयन्सर्वभूतानि यत्नाद्ब्रह्मणि मायया BHAG. 18, 61. ऋ-विद्याकर्मतृन्नाभिर्धाम्यमाणो ऽयं चक्रवत् MBH. 3, 117. तस्मिंश्च धाम्यमाणो ऽङ्गो 1, 1133. उत्तिष्ठ्याधामयदेहे तूर्णं दशगुणं तदा 6031. 6461. 2, 762. 4, 360. fg. HARIV. 8314. R. 2, 44, 7. 3, 33, 48. 6, 78, 15. BUĀG. P. 4, 12, 9. PAÑKĀT. 263, 8. Schol. zu KĀTJ. ÇA. 209, 3. 217, 21. लीलाविन्दं धमयां चकार RAGH. 6, 13. RĀGĀ-TAR. 4, 476. BHATT. 14, 9. ऋविधमत् 13, 53. *kreisen lassen* (die Gestirne): स (ध्रुवः) वै धमन्धामयते चन्द्रादित्यौ ग्रहेः सह Verz. d. Oxf. H. 41, a, N. 2. सर्वयो ज्योतिर्गणानां ग्रहन्तत्रादीनाम् — भगवता कालेन धाम्यमाणां नान् BUĀG. P. 5, 23, 2. *rollen lassen*: रथं धामयेत्पुरे Verz. d. Oxf. H. 31, a, 16. zu Wagen durchfahren: धामयेन्नगरं सर्वम् 7. 8. — 3) *in Unordnung bringen*: सन्तानामग्रं धमयन्नुदेति KAUC. 99. *verwirren, in die Irre leiten*: मायया त्वो धामयति (धमयति die neuere Ausg.) कृत्तः HARIV. 13787. धाम्यते धीर्न तद्वाक्यैः BUĀG. P. 3, 2, 10. धमेण धाम्यते योगी Verz. d. Oxf. H. 30, b, 24. MĀRK. P. 31, 41. 57. यज्ञो धम्यते ज्ञानी मुच्यते Schol. bei WILSON, SĀMĀHJAK. S. 48. — 4) *umherirren*: तत्रैवाविधमदेवी (गङ्गा) संवत्सरांस्वहन् R. 1, 44, 12. ध्रुवधमत् ed. Bomb. 34, 9; die Scholien: धार्यत्वात्सन्वदितं न.

— *intens. umherziehen, sich unstät hinundher bewegen*: वन्धमती गगनोपरि (उत्का) VARĀH. BRH. S. 33, 11. वन्धमीति च मे दृष्टिर्ही क्वा यामि ध्रुवं त्वम् HARIV. 8728. *durchwandern*: क्रमेण सकलामवनीं वन्ध-म्यमाणा Z. d. d. m. G. 14, 373, 8. वन्धम्यते (pass.) कायं धर्मवाङ्मया सर्व-दिश्वुखम् ÇATR. 1, 18.

— उद् 1) *auffahren, aufspringen*: दृष्ट्वा स्वप्रगतो राममुद्धमामि वि-चेतनः R. 3, 43, 34. ध्यापत्युद्धमति प्रमोदति पतत्युद्याति मूर्खत्यपि Gīt. 4, 19. उद्धम्य (sic) absol. DAÇAK. in BENF. Chr. 183, 17. उद्धमता त्वया (सूर्येण) *sich erheben, aufgehen* MĀRK. P. 78, 8. प्रेमोद्धमद्वा *sich heben* BUĀG. P. 4, 23, 25. उद्धात *aufgefahren, aufgefliegen*: प्रदीनोद्धातविक्रम (गिरि) R. 6, 83, 26. मरिचोद्धातकारीता मलयोद्धातविक्रमाः RAGH. 4, 46. UTTARARĀMAK. 102, 20. पवनोद्धातवीचि *erhoben* Spr. 2036. काश्चिदुद्धातन्-पुराः *hinanngerutscht* R. 5, 13, 34. ०नेत्र, ०नयन, ०लोचन, ०दृष्टि *dessen Augen nach oben verdreht sind* MBH. 4, 777, 7. 3156. 6883. 13, 4074. R. 2, 63, 21. PAÑKĀT. 141, 4. स देव्याः पादयोर्ग्रे पपतोद्धातजीवितः *entfliehend, davon gehend* RĀGĀ-TAR. 3, 409. उद्धात *n. das Sicherheben*: तस्य पतनपतेन पवनो-द्धातकारिणा *bewirkend, dass ein Wind sich erhob*, HARIV. 3820. *eine best. Kampfart* 11048 (S. 791). 13494. 13977. — 2) उद्धात *umherstreichend, umherirrend*: उद्धातः प्राविशं घोरामटवीम् MBH. 13, 546. कदा-चिन्मृगया यात उद्धातो गह्वरे वने 562. — 3) उद्धात *aufgeregt*: उष्ट्राश्वाः *wild geworden* MBH. 3, 112. तदोक्तुलमिवोद्धातमुद्धातरथययम् (so die neuere Ausg.) 6, 2547. R. 3, 37, 16. 6, 8, 41. VARĀH. BRH. S. 12, 6. KATHÁS. 12, 184. 19, 73. 38, 125. 42, 108. Gīt. 4, 1. ०चेतम् R. 2, 36, 22. ०चेतना RAGH. 12, 74. ०चित्त PAÑKĀT. ed. orn. 31, 14. स्थान *ein Ort, an dem es aufgeregt hergeht*, MBH. 3, 15734 (उद्धाम्य st. उद्धातं DRAUP. 8, V. Theil.

19). विस्मयोद्धातभाषिणाम् *aufgeregt redend* R. 5, 31, 24. — Vgl. उद्धम fgg. — *caus.* 1) *schwingen*: तुरात्तमुद्धाम्य भुजेन चक्रम् MBH. 6, 2597. गदाम् 7, 5196. — 2) *aufregen*: (गङ्गा) स्ववेगोद्धामितजला R. GORR. 1, 43, 27. — समुद्. partic. समुद्धात *aufgeregt*: वाजिन् *wild geworden* Spr. 2873. वलमासीत्समुद्धातं द्रोणार्जुनसमागमे MBH. 4, 1882. R. 3, 72, 14. KATHÁS. 3, 99. 18, 196. 24, 33. 29, 78. 39, 35. SOM. NALA 33.

— उप *hinschlendern zu*: सा च तदाग्रमोपवनम् — उपवधाम BUĀG. P. 5, 2, 4.

— परि 1) *umherstrecken, umherirren*: कस्येक कृते परिधमघरे लो-काः Spr. 2071. तामिमे नरके परिधमति (zur Erkl. von परिवर्तते) KULL. zu M. 4, 163. परिधमन् R. 5, 11, 20. KATHÁS. 14, 76. 36, 114. MĀRK. P. 21, 50. PAÑKĀT. 21, 1. Hit. 33, 4. ÇUK. in LA. (II) 33, 5. ०धाम्यन् KATHÁS. 37, 204. पर्यधमत MBH. 3, 12228. ०धममाण PAÑKĀT. 10, 6. ०वधम् R. GORR. 1, 41, 24. ०वधाम KATHÁS. 43, 138. ०धेमुः 33, 110. ०धातुम् 40, 83. RĀGĀ-TAR. 6, 16. ०धमितुम् PAÑKĀT. ed. orn. 49, 19. द्वा भवान्परिधातः *wo hast du dich herumgetrieben?* MĀLAV. 46, 13. PAÑKĀT. 87, 21. परिध-मति किं वृथा (चित्त) Spr. 1718. इह सविधे मुग्धदशो मधुकर न मुधा प-रिधाम्य *umherflattern* 2709. परिधमन्मूर्धनपट्टाकुलैः — मुलैः KIR. 4, 14. (पल्लवैः) पल्लवुक्तिपरिधातौ KATHÁS. 43, 34. पारावतः परिधम्य रिरंमुशु-म्वति प्रियाम् *hinundher gehend* Spr. 3881. — 2) *durchstreichen, durch-irren, durchziehen*: भीमेन नाराचामिकृता गन्ताः । पेतुः सेडुश्च नेडुश्च दि-शश्च परिधमः ॥ MBH. 6, 3960. द्वीपात्तराणि KATHÁS. 36, 23. तीर्थानि 49, 220. पृथिवीम् BUĀG. P. 5, 3, 30. MĀRK. P. 17, 16. 69, 12. Hit. 64, 4. v. l. (ed. JOHNS. 1346). ऋषयानीम् Hit. ed. JOHNS. 980. ततः सव्यं दक्षिणं च मण्डलानि (मण्डलं स die neuere Ausg.) परिधमन् *Kreise beschreiben* HARIV. 4297. — 3) *sich drehen, sich im Kreise bewegen*: घनेन खल्वी-रितः परिधमतीदं शरीरं चक्रवत् MAITRĀJUP. 2, 6, 3, 4. BUĀG. P. 4, 12, 9. 2, 2, 2. 3, 19, 26. (सूर्यस्य) संवत्सरात्मकं चक्रं देवानामहोरात्राभ्यां परि-धमति 5, 20, 30. 21, 13. श्येनः परिधाम्यति Spr. 632. परिधमतं गिरिम् BUĀG. P. 8, 7, 10. परिधमति राजश्रीरकर्णा नैरिवाभसि R. GORR. 2. 82, 6 (81, 6 GORR.). याम्योत्तरे रवौ । परिधमति (so ist zu lesen) SĪRJAS. 3, 32. 12, 31. 71. — 4) *umkreisen, einen Kreis um Etwas (acc.) beschrei-ben*: सूर्यस्य मेहं परिधमतः BUĀG. P. 5, 20, 30. — Vgl. परिधम fgg.

— प्र *umherstreichen, umherirren* KATHÁS. 33, 111. *durchstreichen, durchwandern*: दिशः 37, 157.

— वि 1) *umherstreichen, umherirren, sich hinundher bewegen*: वि-धातं (impers.) वने च देव्या NALOD. 3, 26. वध्यमानं तु तत्सैन्यं द्रोणेन नि-शितः शैरः । व्यधमतत्र तत्रैव लोभ्यमाण इवार्णवः ॥ MBH. 6, 3410. पति-णश्च मरुयोर् व्याकृतो विवधमः *umherfliegen* 4520. विधमद्रम BUĀG. P. 1, 6, 13. प्रेमस्मितोदीक्षणाविधमद्रू *zucken* 3, 21, 22. 4, 23, 30. ऋविधातध्रुप-ताक *sich nicht bewegend, unbeweglich* DAÇAK. in BENF. Chr. 199, 5. विधा-तनयन *dessen Augen hinundher gehen, rollen* R. GORR. 2, 11, 10. fg. वापुवि-धातकुताशनार्चिया *bewegt* R. 5, 32, 17. प्रौढोदीक्षणाविधातमन्वाचल PRAB. 81, 14. विह्वलन्निव दुःखेन विधमन्निव चातुरः *schwankend* R. GORR. 2. 84, 2. विश्वविधातकीर्ति *dessen Ruhm in der Welt verbreitet ist* PRAB. 3, 8. — 2) *durchstreichen, durchirren*: स विधमन्महौं सर्वाम् MBH. 3, 2648. — 3) *auseinandertreiben, verscheuchen*: मरुवात इवाध्राणि वि-धमिता रणाद्भजान् (विधमिता स वारणान् die neuere Ausg.) MBH. 6,